

इस अंक में

शोध गतिविधियाँ
उपलब्धियाँ
महत्वपूर्ण दिवसों का आयोजन
बैठक
विस्तार गतिविधियाँ
प्रशिक्षण
अन्य विस्तार गतिविधियाँ
प्रदर्शनी
दौरे / यात्राएं
अन्य
नियुक्ति
सेवानिवृत्तियाँ

भविष्य के कार्यक्रम

संस्थान स्थापना दिवस: 1 अक्टूबर

भा.कृ.अनु.प. के तहत पश्चिमी क्षेत्र
खेलों का आयोजन: 20-24 नवम्बर

शुष्क और अर्द्ध-शुष्क क्षेत्र में जलवायु
परिवर्तन के उपशमन और अनुकूलन पर
10 दिन का लघु पाठ्यक्रम:
8-17 दिसम्बर

निदेशक की कलम से.....



थार रेगिस्तान में 1961 में इंदिरा गांधी नहर परियोजना के आने के बाद से लगभग 18.6 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचित खेती होने लगी है। हालांकि, सिंचाई से कृषि उत्पादन क्षमता में वृद्धि हुई है, किन्तु इससे कई स्थानों पर जल प्लावन के कारण मृदा लवणता में भी वृद्धि हो रही है। जलस्तर वृद्धि में रोकथाम या तो संतृप्त क्षेत्र से पानी के प्रत्यक्ष निकासी या पानी के पुनर्भरण में कमी करके या दोनों के संयोजन से की जा सकती है। इसके निर्णायक सबूत मौजूद हैं कि कई प्रकार के उपयुक्त पेड़ जलस्तर में वृद्धि की समस्या को कम करने की क्षमता रखते हैं। वनस्पति और वृक्षारोपण द्वारा मिट्टी से लवणता में कमी के कुछ संकेत भी हैं। इसलिए, जैव जल निकास, भूजल समस्या से निपटने के लिए एक प्रभावी तरीके की अवधारणा के रूप में उभरा है। इस तरह के दृष्टिकोण पर्यावरण के अनुकूल और अन्य परम्परागत उपायों की तुलना में किफायती होते हैं।



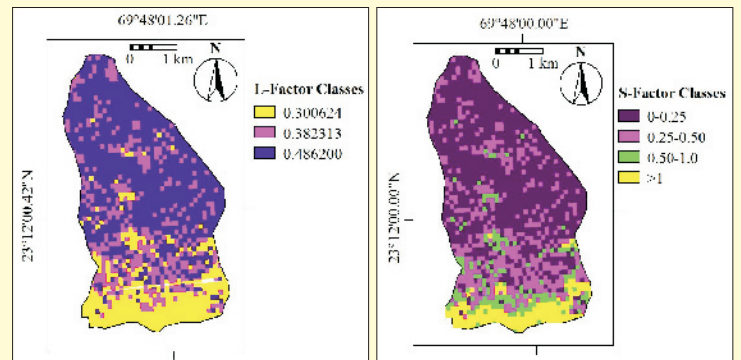
हालाँकि, अभी भी परिस्थिति विशेष के लिए भूजलस्तर, मिट्टी और भूजल लवणता पर पेड़ों के प्रभाव को और अधिक गहराई से समझने की आवश्यकता है। इसके निहितार्थ और अधिक अनुसंधान कर नामक सहिष्णु पेड़ों की प्रजातियों की पहचान करना आवश्यक है, जो कि किसानों के खेतों से जैव जल निकासी में सक्षम हों साथ ही, पेड़ और मृदा के बीच नमक संतुलन और विशिष्ट खेत स्थितियों आदि का मुकाबला करने के लिए भी सर्मथ हों और जिनका प्रयोग आर्थिक रूप से व्यवहार्य भी हो। पानी के समुचित उपयोग के लिए कुशल सिंचाई विधियों, के साथ साथ जैव जल निकासी से जुड़ी समस्याओं को नियंत्रित करने, एंव जल सम्मिश्रण के लिए, एक व्यवहारिक नीति भी वांछनीय है।

- मुरारी मोहन राँय

शोध गतिविधियाँ

कुक्मा जलग्रहण क्षेत्र में जल के कटाव की उन्मुखता को प्रदर्शित करते स्थलाकृतिक नक्शे

कुक्मा जलग्रहण क्षेत्र के स्थानिक मानचित्र का डिजिटल एलिवेशन मॉडल (डीईएम) भौगोलिक सूचना प्रणाली द्वारा स्थलाकृतिक कारकों के अनुरूप (ढाल-लम्बाई और ढाल-तीक्ष्णता), तथा यूनिवर्सल मिट्टी हानि समीकरण (यू एस एल ई) के सहित तैयार किये गये। जलग्रहण क्षेत्र का डिजिटल एलिवेशन मॉडल के डेटा शटल रडार स्थलाकृतिक मिशन (एस आर टी एम) 3 चाप-द्वितीय (90 मीटर पिक्सेल आकार) से प्राप्त किये गये। ढाल-लम्बाई और ढाल-तीक्ष्णता मिट्टी के कणों का वर्षा के प्रभाव या जलअपवाह से उखड़ना तथा मृदा कणों के परिवहन को प्रभावित करते हैं। ये दोनों स्थलाकृतिक नक्शे जलग्रहण के विभिन्न हिस्सों में पानी के कटाव उन्मुखता की डिग्री चित्रित करते हैं। ढाल-लम्बाई कारक का मान जलग्रहण क्षेत्र के दक्षिणी भाग में सबसे कम है, जहाँ भू-सतह कि ऊँचाई तथा ढाल दोनों ही अपेक्षाकृत अधिक है। ढाल-तीक्ष्णता कारक का मान जलग्रहण क्षेत्र के उत्तरी व मध्य के ज्यादातर भागों में बहुत कम (0-0.25) है। ढाल-तीक्ष्णता कारक के सर्वाधिक मान उन जगहों पर पाये गए जहाँ सतह की ऊँचाई तथा



ढाल-लम्बाई कारक का मानचित्र

ढाल-तीक्ष्णता कारक का मानचित्र

ढाल दोनों ही अपेक्षाकृत अधिक है। यू.एस.एल.ई. के अन्य प्रमुख कारकों जैसे वर्षा अपजल कारक (आर) और मिट्टी वर्षा-अपरदित कारक (के) के साथ इन स्थलाकृतिक नक्शों से, कुक्मा जलग्रहण क्षेत्र के विभिन्न भागों के लिए संभावित मिट्टी नुकसान की दर (टन/हेक्टेयर/प्रति वर्ष) गणना की जा सकती है।

- दीपेश माचीवाल, देवी दयाल एवं संजय कुमार

काजरी मृदा नमी गणक

पश्चिमी भारत के गर्म शुष्क क्षेत्र में उपलब्ध मृदा आँकड़ों से 1/3 बार (एफ.सी.) और 15 बार (पी.डब्ल्यू.पी.) पर मृदा जल प्रतिधारण के अनुमान के लिये प्रतिगमन आधारित पी.टी.एफ. का विकसित किया गया। इन विकसित नमूनों का और आगे प्रमाणीकरण किया गया एवं स्वाधीन आँकड़ों पर परीक्षण कर इन्हें उपयुक्त पाया गया। विकसित पी.टी.एफ. के विस्तृत उपयोग के लिये माइक्रोसॉफ्ट विजुअल स्टूडियो, संस्करण 6.0 का इस्तमाल करते हुए एक उपभोक्ता अन्तराफलक तैयार किया गया है। किसी विशेष पी.टी.एफ. प्रतिमान के चयन के लिये ड्रॉप डाउन सूची की भी रचना की गई है। इन विकसित पी.टी.एफ. के अलावा, पहले से स्थापित हुए पी.टी.एफ. को भी शामिल किया गया है। चुने हुए पी.टी.एफ. प्रतिमान के अनुसार आवश्यक निवेश स्थान के लिये व्यवस्था बनाई गई है। ऐसे प्रतिबन्ध भी शामिल किये गए हैं जिससे कि रेत, गाद और चिकनी मिट्टी के अनुपात जोड़ने पर 100 प्रतिशत हो। निम्न चयनित पी.टी.एफ. नमूनों में $\theta_{1/3}$ बार और θ_{15} बार के अनुमान के लिये योजना संकेतावली लिखे गये हैं। विकसित किये गये काजरी मृदा नमी गणक काजरी वेबसाइट (http://www.cazri.res.in/soil_moisture.php) पर उपलब्ध है।

प्रियव्रत सांतरा, महेश कुमार, राम नारायण कुमावत एवं धीरेन्द्र कुमार पेंतुली

शुष्क क्षेत्र के लिए एक कृषि प्रणाली मॉड्यूल

अप्रत्याशित बारिश, सूखा और वार्षिक फसलों की विफलता, शुष्क पश्चिमी मैदानी इलाकों में आवर्ती घटनाएं हैं। आजीविका में स्थिरता, अतिरिक्त आय और पशुओं के चारे की निरंतर उपलब्धता के लिए, एक कृषि प्रणाली मॉड्यूल



विकसित किया गया और संस्थान के केंद्रीय अनुसंधान प्रक्षेत्र में परीक्षण किया गया। सात हेक्टेयर भूमि में छह उत्पादन प्रणालियां अर्थात्, कृषि वानिकी (खेजड़ी+ फसल), कृषिवन-संवर्धन (अन्जन वृक्ष + फसल), कृषि बागवानी (बेर+ फसल), वन चरागाह (मोपेन + धामन घास) कृषि बागवानी चरागाह (बेर+धामन घास) और कृषि वानिकी (खेत की मेड पर इजरायली बबूल का वृक्षारोपण)। छह वयस्क पशु इकाइयों (४ गायों, ८ बकरों और ४ मेढ़े) को भी इस मॉड्यूल पर मिश्रित भोजन प्रणाली के तहत रखा गया।

विलंबित मानसून स्थितियों के तहत, वार्षिक फसलों का उत्पादन औसत से कम था। इन वार्षिक फसलों (बाजरा, मूँग, मोठ, ग्वार) के तहत 57435 रुपये का शुद्ध लाभ प्राप्त हुआ (लाभ : लागत अनुपात 1.68)। लेकिन इस मॉड्यूल से 800 मानव दिवस से अधिक रोजगार और पशुओं की कुल चारा आवश्यकताओं की आपूर्ति हुई तथा 7712 लीटर दूध और 291.8 किलो मांस का उत्पादन हुआ। कुल मिलाकर, इस कृषि प्रणाली मॉड्यूल से 1.76 की लाभ : लागत अनुपात से 459826 रुपये की आय प्राप्त हुई। इस तरह मॉड्यूल द्वारा वार्षिक फसलों की तुलना में 199136 रुपये का शुद्ध लाभ हासिल किया गया।

- सुरेश पाल सिंह तंवर, अकथ सिंह, मावजी पाटीदार एवं अजय वीर सिंह सिरौही

उपलब्धियाँ

संस्थान को "सतत शुष्क भूमि प्रबंधन" के लिए आईएसओ 9001-2008; गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली के दायरे में; प्रमाण पत्र सं BN9963/8880:0714 के साथ सम्मानित किया गया है। जो कि 31 जुलाई 2014 से 30 जुलाई 2017 तक मान्य होगा।

बौद्धिक संपदा प्रबंधन और व्यावसायीकरण के तहत इस दौरान संस्थान के इकाई द्वारा निम्नलिखित गतिविधियों हेतु सुविधाएं दी गईं

कांटा रहित थोर के प्रसार हेतु सामग्री हस्तांतरण समझौते के माध्यम से महातमा फुले कृषि विश्वविद्यालय, राहुरी, महाराष्ट्र और अंगूर, अनंतपुर, आंध्रा प्रदेश को रोपण सामग्री प्रदान की गई।

गोपनीय प्रकटीकरण समझौते के माध्यम से आशापुरा एसोसिएट्स,



जोधपुर, के साथ सौर पीवी डस्टर के डिजाइन चित्र और सामग्री सूचियों के लिए एक साझा किया गया।

नैनो पोषक उत्पादन की व्यवहार्यता का आकलन करने के लिए इफको फूलपुर इकाई में 17 जुलाई को सलाहकार परामर्श की सेवा प्रदान की गई।

6 सितंबर को समझौता ज्ञापन के तहत नैनो पोषक तत्व (ज़िंक) के लिए सौभाग्य बायोटेक प्राइवेट लिमिटेड हैदराबाद के साथ हस्ताक्षर किए गए।

6 सितंबर को पोस्ट एनआईपी समझौता ज्ञापन के तहत नैनो पोषक तत्वों (ज़िंक लोहा, फास्फोरस मैग्नीशियम) और नैनो प्रेरित पॉलीसेकेराइड पाउडर के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (नेता) और काजरी, जोधपुर; पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना; बिट्स, पिलानी (साझेदार) के साथ हस्ताक्षर किए गए।

महत्वपूर्ण दिवसों का आयोजन

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् का 86 वाँ स्थापना दिवस 16 जुलाई को काजरी जोधपुर में मनाया गया। काजरी निदेशक डॉ मुरारी मोहन रॉय ने भा.कृ.अ.प. की स्थापना, शोध गतिविधियों, देश में कृषि के विकास के लिए विकसित नवीन तकनीकियों एवं शोध उपलब्धियों के बारे में बताया। डॉ रॉय ने नैनो उर्वरक, जलवायु अनुरूप कृषि, सौर उपकरणों तथा पशुधन नस्लों के संरक्षण, स्वदेशी फसलों, पौध संसाधन के सतत कृषि पद्धतियों पर प्रकाश डाला।



कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ प्रीतम बी. यशवन्त, जिला कलक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट, जोधपुर ने कहा कि भा.कृ.अ.प. ने देश में कृषि शोध, नवाचार, शिक्षा, विस्तार तथा कृषि विकास के लिए प्रौद्योगिकियों विकसित कर देश को लाभान्वित किया एवं कृषि विकास को गति मिली। उन्होंने काजरी की शोध उपलब्धियों, किसानों को प्रशिक्षित करने, कृषि एवं पशुपालन के विकास के लिए किये जा रहे कार्यों की सराहना की। कार्यक्रम में जोधपुर के आस-पास के गाँवों के किसानों ने भाग लिया। किसानों ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि काजरी के वैज्ञानिकों द्वारा दिये गये प्रशिक्षण से उनके ज्ञान तथा आय में भी वृद्धि हुई।

भा.कृ.अनु.प.—कृषि दिवस 7 अगस्त को काजरी में मनाया गया। इसमें कृषि शिक्षा विषय से जुड़े चौपासनी उच्च माध्यमिक विद्यालय, तथा सरस्वती बाल विना भारती उच्च माध्यमिक विद्यालय, सूरसागर, जोधपुर के करीब 80 छात्रों ने भाग लिया। विद्यार्थियों को कृषि तकनीकी सूचना केन्द्र, सौर ऊर्जा प्रांगण, कृषि के आधुनिक यंत्रों, मरु वानस्पतिक उद्यान, संग्रहालय का भ्रमण करवाकर, नवीन तकनीकियों, शोध उपलब्धियों के बारे में जानकारी दी गई तथा काजरी की शोध उपलब्धियों पर फिल्म शो दिखाया गया। विद्यार्थियों के लिए प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गई। विजय रहे छात्रों को पुरस्कार वितरण किये गये। काजरी वैज्ञानिकों ने "सौर उर्जा – एक उज्ज्वल भविष्य की आशा" पर व्याख्यान दिया एवं सौर उर्जा के विभिन्न उपयोगों एवं प्रायोगिक पद्धतियों की जानकारी दी। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ लक्ष्मी नारायण हर्ष, कुलपति, कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर ने कहा कि कृषि शिक्षा ज्ञान मिलने से, भविष्य में कृषि उत्पादों का मूल्य संवर्द्धन कर स्वरोजगार प्राप्त कर सकते हैं। डॉ मुरारी मोहन रॉय, काजरी निदेशक ने कृषि शिक्षा के क्षेत्र में रोजगार की संभावनाओं, उच्च शिक्षा प्राप्त करने के विभिन्न शिक्षण संस्थाओं के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कृषि ज्ञान प्राप्त कर विद्यार्थी खुद के व्यवसाय से रोजगार प्राप्त कर सकते हैं।



काजरी में 15 अगस्त को **स्वतंत्रता दिवस** उत्साह एवं जोश से मनाया गया। डॉ मुरारी मोहन रॉय, निदेशक, काजरी, जोधपुर ने झण्डारोहण किया तथा राष्ट्रगान हुआ। इस अवसर पर काजरी निदेशक ने वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संबोधित किया तथा संस्थान को आई.एस.ओ. 9001:2008 प्रमाण पत्र प्राप्त होने पर सबको बधाई दी एवं संस्थान के विकास के लिये आह्वान किया। कर्मचारियों के लिए खेल-कूद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया तथा पुरस्कार वितरित किये गये।



हिन्दी सप्ताह (16–23 सितम्बर) कार्यक्रम का उद्घाटन, मुख्य अतिथि श्री रामनारायण डूडी, सांसद (राज्यसभा), द्वारा किया गया। इस मौके पर उन्होंने कहा देश को आजादी दिलाने, देशवासियों में स्वतंत्रता के प्रति जोश, उर्जा भरने का काम हिन्दी भाषा ने किया। उन्होंने नवीन तकनीकों को गाँवों तक पहुंचाने का आह्वान किया तथा काजरी द्वारा मरु क्षेत्र को हरा-भरा बनाने के लिए दिये गये योगदान के लिए सराहना की। इस समारोह के सम्मानित अतिथि डा नंदलाल कल्ला, सेवानिवृत्त हिन्दी विभागाध्यक्ष, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर थे। इस समारोह की अध्यक्षता डॉ मुरारी मोहन रॉय, निदेशक, काजरी ने की। सप्ताह के अन्तर्गत विभिन्न प्रतियोगिताओं, प्रार्थना पत्र लेखन, हिन्दी निबन्ध (शीर्षक: भारतीय अर्थ व्यवस्था में कृषि का योगदान), हिन्दी टंकण, सामान्य हिन्दी, हिन्दी शोध पत्र, वाद-विवाद आदि आयोजित की गई। हिन्दी विजय एवं पुरस्कार वितरण के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। निदेशक महोदय डॉ मुरारी मोहन रॉय ने अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करने का आह्वान करते हुए, विजेताओं को पुरस्कार वितरित किये।



बैठक

भा.कृ.अनु.प. क्षेत्रीय समिति संख्या 6 की 23 वीं बैठक, आनंद कृषि विश्वविद्यालय, आनंद, में आयोजित की गई जहाँ गुजरात, राजस्थान राज्य और दमन दीव और दादरा एवं नागर हवेली संघ शासित क्षेत्रों के विभिन्न कृषि जलवायु क्षेत्रों में खेती के विभिन्न उभरते मुद्दों और समस्याओं पर चर्चा की गई। डॉ सुब्बन्ना अय्यप्पन, सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भा.कृ.अनु.प., नई दिल्ली ने इसकी अध्यक्षता की। श्री राज कुमार, प्रमुख सचिव (कृषि), गुजरात सरकार मुख्य अतिथि थे। डॉ सुब्बन्ना अय्यप्पन ने अपने अध्यक्षीय भाषण में बहुउद्देश्यीय वृक्ष प्रजातियों को भोजन, फाइबर और ईंधन की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुये दोनों राज्यों में कृषि वानिकी प्रणाली में शामिल किये जाने पर बल दिया। स्थानीय पशुधन

नस्तों बन्नी और मेहसाणा भैंस दूध की उपलब्धता और क्षेत्र में आगे आर्थिक लाभ में सुधार लाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इस अवसर पर गुजरात और राजस्थान के राज्यों से प्रगतिशील किसानों को कृषि के विभिन्न क्षेत्रों में उनके महत्वपूर्ण योगदान के लिए सम्मानित किया गया।



विस्तार गतिविधियाँ

29 अगस्त 2014 को काजरी के **प्रादेशिक अनुसंधान केन्द्र, लेह मे एक दिवसीय किसान मेला** आयोजित किया गया। इसके मुख्य अतिथि डॉ आलोक कुमार सिक्का, उप महानिदेशक (प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन) थे। श्री जिगमत टकपा, मुख्य वन संरक्षक एवं प्रोजेक्ट निदेशक, लद्दाख अक्षय ऊर्जा विकास एजेंसी इसके सम्मानित अतिथि थे। डॉ सिक्का ने किसानों से जुड़े विभागों एवं अनुसंधान केन्द्रों के बीच तालमेल पर बल दिया जिससे टिकाऊ कृषि प्रौद्योगिकियों को किसानों तक तेजी से पहुंचाया जा सके। उन्होंने काजरी के केन्द्र द्वारा लेह कार्य की सराहना की। डॉ टकपा ने क्षेत्र की समस्याओं के बारे में बताया साथ ही इससे संबन्धित सरकार की ओर से किए

गये कार्यों के बारे में बताया। इस मेले में 300 किसानों, जिसमें 180 महिलायें ने भाग लिया। इस मेले में राज्य के विभिन्न विभागों एवं गैर सरकारी संगठनों ने 10 स्टाल लगाकर अपनी प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन किया। इस क्षेत्र के 10 नवाचारी किसानों को उनके उत्कृष्ट कार्य के लिए मुख्य अतिथि एवं सम्मानित अतिथि द्वारा सम्मानित किया गया।



काजरी प्रांगण में दिनोंक 24 सितम्बर को **किसान मेला एवं नवाचार दिवस** आयोजित किया गया। इस अवसर पर शेरगढ, विधायक श्री बाबू सिंह राठौड़ और महाराणा प्रातप कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्राफेसर ओम प्रकाश गिल कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि थे। मेले में संस्थान की गतिविधियों एवं शोध उपलब्धियों के बारे में जानकारी दी गई। मंच से यह संदेश दिया गया कि मरुधरा के किसानों को उच्च तापमान, कम बारिश, कम उपजाऊ जमीन और कम लागत में अच्छी फसल के प्राप्त करने के लिए उन्नत व आधुनिक तकनीकों को अपनाना होगा। इसके लिए संस्थान हर समय किसानों की सहायता के लिए तैयार है। कृषक, संस्थान और कृषि विज्ञान केन्द्र से जुड़े तथा तकनीकों का लाभ लें। मेले में पश्चिमी राजस्थान के लगभग 2000 किसानों ने भाग लिया तथा केंद्रीय, प्रादेशिक एवं निजी संस्थानों ने 37 प्रदर्शनियाँ लगायीं। इस अवसर पर 12 प्रगतिशील किसानों को सम्मानित, श्रेष्ठ चार प्रदर्शनियों को पुरस्कृत एवं 7 बुलेटिनों का विमोचन किया गया।



आयोजित प्रशिक्षण

काजरी एवं क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्रों के प्रशानिक कर्मियों के लिये “नोटिंग एवं ड्रापिंग” विषय पर काजरी, जोधपुर में 30-31 जुलाई को प्रशिक्षण आयोजित किया गया।

कृषि स्नातक विद्यार्थियों के लिये 1-14 अगस्त के दौरान “ऑन कैम्पस समर प्रशिक्षण” आयोजित किया गया।

“विलायती बबूल (प्रोसोपिस जुलिफ्लोरा) के प्रभावी उपयोग” पर दो दिवसीय प्रशिक्षण एवं कार्यशाला का आयोजन 6-7 अगस्त को संस्थान के तकनीकी हस्तांतरण, प्रशिक्षण एवं उत्पादन अर्थशास्त्र संभाग द्वारा तथा प्रायोजन परियोजना निदेशक, एमपावर (राजस्थान सरकार) द्वारा किया गया।

केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर द्वारा जनजातीय उप योजना के अन्तर्गत काश्तकारों के लिए “एकीकृत संसाधन प्रबन्धन

द्वारा जनजातीय समुदाय की आजीविका में सुधार” विषय पर 23 से 27 अगस्त तक एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन डूंगरपुर में किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में 20 महिलाओं सहित 60 किसानों ने भाग लिया।

क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, भुज में “मिट्टी के नमूने लेना, समस्याग्रस्त मिट्टी विश्लेषण और प्रयोगशाला नमूनों की जांच” विषय पर 27-28 अगस्त के दौरान दो दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया।

प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, प्रशिक्षण और उत्पादन अर्थशास्त्र संभाग, द्वारा “कुशल आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन और शुष्क क्षेत्रों में बागवानी उत्पादों के विपणन” विषय पर 1-8 सितम्बर के दौरान प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें राज्य सरकार, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, कृषि विश्वविद्यालय तथा कृषि विज्ञान केन्द्र के 20 अधिकारियों ने भाग लिया।

अन्य विस्तार गतिविधियाँ

जोधपुर जिले के गाँव दांतीवाड़ा में देरी से वर्षा होने की स्थिति में फसल उत्पादन हेतु कृषि की उन्नत तकनीकियों पर 13 जुलाई को क्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया।

कम मानसून परिदृश्य के तहत कृषक समुदाय को जोखिम करने के लिए आवश्यक जानकारी देना हेतु, 13 जुलाई को गाँव भुजावर (जोधपुर) में एक मानसून तैयारी शिविर आयोजित किया। शिविर में कुल 45 किसानों ने भाग लिया।

जोधपुर जिले के बीजवाड़ीया गाँव में किसानों की जानकारी एवं प्रचार के लिए रिजका बाजरा के 14 प्रदर्शन आयोजित किये गये।

प्रदर्शनी

अगस्त 11-12: श्री वीर तेजाजी पशु मेला परबतसर, जिला नागौर में काजरी संस्थान द्वारा प्रदर्शनी लगायी गई तथा पशुपालकों को कम लागत में पोषक संतुलित पशु आहार तैयार करने, पशुओं को स्वस्थ रखने एवं अधिक उत्पादन प्राप्त करने के बारे में संस्थान की नवीन तकनीकियों के बारे में जानकारी दी गई।



दौरे / यात्राएँ

उप महानिदेशक (पशु विज्ञान) डॉ कृष्ण मुरारी लाल पाठक ने 21 सितंबर को क्षेत्रीय अनुसंधान स्टेशन लेह और स्तकना स्थित अनुसंधान प्रक्षेत्र का भ्रमण किया। उन्होंने स्टेशन की स्थापना के लिए किए गए प्रयासों की सराहना की और भारतीय अनुसंधान परिषद का प्रभाव बनाने के लिए लेह सरकार के विभागों के साथ निकट सहयोग में काम करने पर बल दिया। उन्होंने अनुसंधान प्रक्षेत्र पर *सेलिक्स अल्बा* का पौधा भी लगाया।

विदेश यात्राएँ

डॉ अकथ सिंह, वरिष्ठ वैज्ञानिक (बागवानी) एवं डॉ नवरतन पंवार, वरिष्ठ वैज्ञानिक (मृदा विज्ञान) ने “सरकारी क्षेत्र में काम कर रहे वैज्ञानिकों और

प्रौद्योगिकीविदों के प्रशिक्षण के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम” विषय पर 18-22 अगस्त, के दौरान चीन में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।

डॉ चन्द्र भूषण पाण्डे, विभागाध्यक्ष, सितम्बर 1 से दिसम्बर 31 तक के लिये “फूलब्राइट नेहरु एकेडेमिक एवं प्रोफेशनल एक्सीलेन्स फेलोशिप” के लिये वर्जिनिया (अमेरिका) में पदस्थापित।



अन्य

नियुक्ति

कुमारी स्टेन्जिन लैन्डोल, टी-3 (क्षेत्र सहायक), 21.07.2014 से

सेवानिवृत्तियाँ

जुलाई: श्री डावर राम, वरिष्ठ तकनीशियन; श्री पाबू सिंह, तकनीकी सहायक; श्री गोपाल किशन, एस.एस.एस.

अगस्त: श्री गिरधारी राम, तकनीकी अधिकारी; श्रीमती सुन्दरी देवी, एस.एस.एस; श्री सोहन लाल, ड्राइवर

सितम्बर: श्री पुरुषोत्तम शर्मा, मुख्य तकनीकी अधिकारी; श्री सुरेश चन्द्र व्यास, तकनीकी अधिकारी; श्री चन्द्र किशोर, एस.एस.एस.

प्रकाशक	:	निदेशक, केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर 342 003
सम्पर्क	:	+91-291-2786584 (कार्यालय) +91-291-2788484 (निवास) +91-291-2788706 (फैक्स)
	:	ई-मेल: director@cazri.res.in ; वेबसाइट: http://www.cazri.res.in
सम्पादन समिति	:	शर्मिला रॉय, धर्म वीर सिंह, नव रतन पंवार, प्रियव्रत सांतरा एवं राकेश पाठक
तकनीकी सहयोग	:	श्री बल्लभ शर्मा